अल्लाह से डरो, तौबा करो

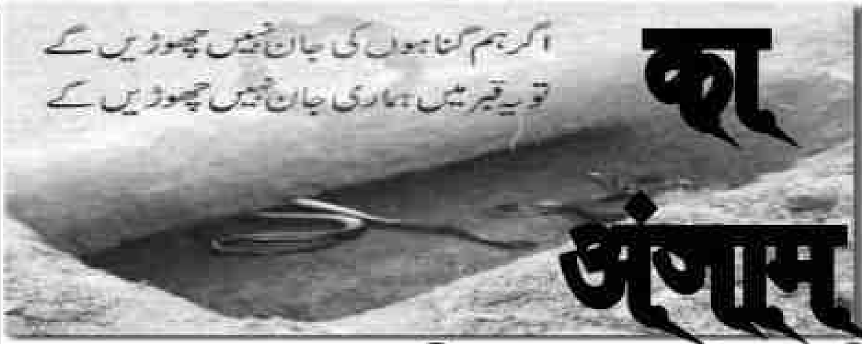
बे नमाज़ियों का बुरा अंजाम

नमाज
से पहले तीन अमल है

1. ईमान
2. ईल्म
3. पाकी

पहले इसे दुरुस्त करें
फिर नमाजी बनें

बे नमाज़ियों



का अंजाम

कुरआन व अहादीस व वाक़्यात की रोशनी मे बे नमाज़ियों का अंजाम

ज़ेरे सरपरस्ती

पीरे तरीक़त रहबरे शरियत हज़रते अल्लामा व मौलाना अल्हाज मुफ्ती आफाक़ अहमद साहब मुजद्दिदी शैखुल हदीस:अल जामियतुल अहमदिया क़न्नौज)

मुरत्तिब

हज़रते अल्लामा व मौलाना सैय्यद मुहम्मद नाज़िम अली साहब प्रिंसिपल जामिया निज़ामिया सैय्यदुल उलूम ईदगाह ग्राउण्ड के पास कोंच (जालौन)

चिश्ती कुतुब खाना

[illegible] नगर कस्बा कौंच

नामे किताब ....बे नमाजियों का अंजाम हिस्सा अव्वल

मुरत्तिब.................................हज़रते अल्लामा व मौलाना सै0 नाज़िम अली

मुसलेह.................................हज़रते हाफिज़ो क़ारी सैय्यद काज़िम अली

साले तबाअ्त............................1439 हिजरी. सन् 2018

तादाद..100

क़ीमत 25

किताब मिलने के पते...........

(1) चिश्ती कुतुब खाना **(2)** अहमद मंसूरी ज्वैलर्स
कोंच

(3) सैय्यद नुसरत अली **(4)** सैय्यद आरिफ अली
बघौरा उरई

(5)सैय्यद मेराज अली **(6)** चाँद बाबू जनानी असपताल के सामने
दतिया

(7) सैय्यद वाजिद अली शिवपुरी**(8)** वसीम बरकाती किराना स्टोर

(9) मो0. अफरोज़ खानकाहे मोहम्मदिया कालपी शरीफ

(10) मो0. हारुन कोंच बर्तन बाज़ार की गली कोंच

★ पेशे लफ्ज़ ★

उस रब का बड़ा करम और फज़्ल है।कि इंसान रबकी इबादत भी नही करता लेकिन फिर भी अल्लाह उसको रिज़्क़ देता है।ज़रा आप एक मिसाल देख लें एक बादशाह अपनी रियाया को हुक्म दे.कि तुम फलाँ काम करो.अब अगर वो काम जिसका उसने हुक्म दिया. ना करे तो बादशाह जलाल में आकर उसको मार सकता है।क़त्ल भी करा सकता है।मगर वो रब जो तमाम जहाँनों और तमाम बादशाहों का रब है।तो अगर वो चाहे तो मिटा सकता है।मगर फिर भी रहम फरमा रहा है।रिज़्क़ भी दे रहा है।.इसकी मिसाल इस तरह से भी समझ लें.कि एक बेटे ने अपने बाप से पूँछा कि अब्बू जान आप रोज़ाना डियूटी क्यों जाते हैं।सिर्फ जुमें के जुमे डियूटी जाया करें तो बाप ने जवाब दिया कि बेटा अगर मे जुमे के जुमे डियूटी जाऊँगा तो मेरा मालिक मुझे निकाल देगा.तो बेटे ने फौरन जवाब दिया कि अब्बू जान आप अपने रबके घर (मस्जिद)मे सिर्फ जुमे के जुमे जाते हैं।तो वो रब तो आपको अपने घर से नही निकालता.ये सुनकर बाप हैरत मे पड़ गया कि वाक़ई में ये बात सच है।.
एक बुजुर्ग थे तो उनकी नमाज़ छूट गई तो आपने शाम का खाना नही खाया फिर जब पूँछा गया तो उन्होंने जवाब दिया कि जब मै उस रब की इबादत नही कर सकता तो उसका रिज़्क़ भी नही खा सकता.अब ज़रा हम सोच लें कि हमने भी कभी खाना बंद (छोड़ा)किया है।.
इस तरह से कई वाकियात हैं।जो किताबों मे मौजूद हैं।जिनको पढ़ने के बाद इंसान खुद बखुद नमाज़ी बन जाता है।लेकिन इसके लिए ज़रूरी है। कि पहले हम खुद अमल करें।फिर दूसरों को सिखाऐं।तो इंशा अल्लाह।आप देखेंगे.हर तरफ तमाम लोग नमाज़ के पावंद होंगे.और ये किताबें खुद भी पढ़े और बियाह शादी के मौके पर इन किताबों को तोहफे मे दें तो ज़्यादह से ज़्यादह सवाब मिलेगा.और अगर उन किताबों को पढ़कर कोई नमाजी बन गया तो हमारी निजात भी हो जाऐगी.
बहरहाल हमे चाहिऐ कि हम नमाज़ पंजगाना के आदी बनें और नमाज़ छोड़ने से हमेशा परहेज़ करें।अल्लाह तआ़ला हमे सबको नमाज़े पंज वक़्ता की पावंदी अता फरमाऐ।अमीन सुम्मा आमीन

☆ कुरआन मे बे नमाज़ी के बारे मे फरमान ☆

जान बूझकर नमाज़ क़ज़ा करने वालों के बारे मे कुरआन पाक मे इरशाद होता है।:–फवैलुल लिल मुसल्लीनल 0 अल लज़ीना हुम अन सलातिहिम साहून 0(अल माऊन आयत 4.5)तर्जुमा ए कंजुल ईमान:तो उन नमाज़ियों की खराबी है।जो अपनी नमाज़ से भूले बैठे हैं।(कंजुल ईमान)जहन्नम मे एक वैल नामी खौफनाक वादी है।जिसकी सखती से खुद जहन्नम भी पनाह माँगता है।जान बूझकर नमाज़ क़ज़ा करने वाले उसके मुसतहक़ हैं।क़सदन नमाज़ क़ज़ा करने वालों के लिऐ।अहादीस मे भी अज़ाब वारिद हुऐ हैं।चुनाँचे पढ़िऐ और खौफे खुदा वन्दी से लरज़िऐ.***बे नमाज़ियों पर चंद हदीसें***

हदीस शरीफ :1.हुजूर नबीऐ अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया : अस्सलातु इमादुद् दीन मन अक़ामहा अक़ामद दीन व मन तरकहा फक़द हदामद दीन.

तर्जमा : नमाज़ दीन का खम्बा है।जिसने नमाज़ को क़ायम किया.उसने दीन को क़ायम किया.और जिसने नमाज़ को छोड़ दिया उसने दीन को अपने पीठ के पीछे डाल दिया. (ये हदीस शरीफ अकसर किताबों मे मौजूद है।)

हदीस शरीफ :2..हुजूर नबीऐ अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया :मन तरकस सलाता मुताअम्मिदन फक़द कफारा.

तर्जमा :कि जो शख्स नमाज़े हमेशा छोड़ता रहा तहक़ीक़ कि वो काफिर हो गया.

हदीस शरीफ :3.हुजूर नबीऐ अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि जो शख्स एक वक़्त की नमाज़ छोड़ देगा तो उसके बदले दो करोड़ अठासी साल तक जहन्नम की आग मे उसे जलना होगा.

(नमाज़ और मेडीकल साइंस स0.30 उर्दू)

हदीस शरीफ :4.हुजूर नबीऐ अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ये भी इरशाद फरमाया कि जो शख्स जान बूझ कर एक नमाज़ छोड़ता है।उसका नाम जहन्नम के दरवाज़े पर लिख दिया जाता है।.

हदीस शरीफ :5.हुजूर नबीऐ अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ये भी इरशाद फरमाया कि मै चाहिता हूँ।कि कोई मेरी जगह पर खड़ा होकर नमाज़

पढ़ा दे और मै जाकर उन लोगों के घरों मे आग लगा दूँ जो लोग नमाज़ पढ़ने नही आते हैं।.

हदीस शरीफ :6.हुजूर नबीऐ अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ये भी इरशाद फरमाया कि अपने घरों को क़ब्रिस्तान ना बनाओ यानी उसमे भी कभी नमाज़ पढ़ लिया करो.अब ज़रा गौर करें कि जिस घर मे नमाज़ नही पढ़ी जाऐ वो घर क़ब्रिस्तान की तरह है।अगर उसमे नमाज़ नही पढ़ी जाऐगी तो वो घर क़ब्रिस्तान की तरह वीरान रहेगा.कभी आबाद नही होगा.

हदीस शरीफ :7.हुजूर नबीऐ अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ये भी इरशाद फरमाया कि अपने घरों मे भी मस्जिदे बैत बनाओ यानी घर मे एक जगह ऐसी बनाओ जहाँ घर के सभी अफराद नमाज़ पढ़ते रहे लेकिन ये सिर्फ औरतों और बच्चियों के लिऐ है।और मर्द हज़रात के लिऐ ये है।कि वो कभी कभी नमाज़ की सुन्नते घर पर ही पढ़ लिया करें।और फर्ज़ नमाज़ हर हाल मे मस्जिद मे अदा करें इस लिऐ कि मस्जिद मे नमाज़ अदा करने मे 27/दर्जे ज़्यादा सवाब मिलता है।.

हदीस शरीफ :8.हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जो फजिर की नमाज़ नही पढ़ता जब फजिर की अज़ान होती है।शैतान उसके बिस्तर पर आता है।और उसकी पीठ पर हाँथ फेरता है।और कहता है।नम नम यानी सोजा सोजा इस लिऐ उस वक़्त मीठी नींद आती है।और वो जल्दी उठता नही है।यहाँ तक कि जब फजिर की नमाज़ का वक़्त खत्म होता है।इन्नश शैताना यबूलो फी फी तो शैतान उसके मुंह मे पैशाब करता है।और चला जाता है।एक सहाबी खड़े हुऐ और अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह शैतान मुंह मे पेशाब करता है।मतलब समझ मे नही आता कि वो पैशाब कैसे करता है।तो मेरे आक़ा ने इरशाद फरमाया कि मै समझाता हूँ।कि वो पैशाब की शक्ल मे इंसान के मुंह मे वसवसे डालता है।और याद रखना वो क़तरे दिल मे जाऐंगे और वो दिल मे जमआ ना हों वरना अल्लाह तुम्हारे ईमान को छीन लेगा.

हदीस शरीफ :9.अल्लाह के हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते है।कि अगर उसने एक वक़्त की नमाज़ जान बूझकर जागते मे क़ज़ा करदी (छोड़दी) थी तो एक वक़्त की नमाज़ छोड़ने के बदले मे उस पर 99/साँप

मुसल्लत कर दिऐ जाते हैं।जिस मे से एक एक साँप की ताक़त का आलम ये है।कि अगर वो किसी पहाड़ पर फुनकार मारे तो पहाड़ रेज़ा रेज़ा हो जाऐ या अगर वो दुनिया मे फुनकार दे तो उसकी गरमी से दुनिया के सारे इंसान मर जाऐं ऐसे 99/साँप उस मुर्दे पर मुसल्लत कर दिऐ जाते हैं।उसके बाद एक फरिशता जो आँख से देखता नही और कान से सुनता नही जो जुबान से बोलता नही गूँगा अन्धा और बेहरा फरिशता उसपे मुसल्लत किया जाता है।और नमाज़ छोड़ने की वजेह से सिर्फ एक गुर्ज (हथौड़ा)जब उसके मारता है।तो वो ऐसे पिस जाता है।जैसे चने पर हथौड़ा मारने से चना पिस जाता है।. (आमऐ कुतुब वगैरह)

***हदीस शरीफ :*10.**कुर्रतुल उयून,,में नकल करदा एक हदीस पाक में ये मज़मून है कि उम्मते मुस्तफा (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के दस अफराद ऐसे है। जिन पर अल्लाह अज़्ज़ो वजल बरोज़े क़यामत गज़बनाक होगा,और उनके चहरे बगेर गोश्त के हड्डियो का खोल होंगे और उन्हें जहन्नम की जानिब ले जाने का हुक्म सादिर फरमाऐगा,वो दस अफराद ये है।.**(1)** बुढ़ा ज़ानी **(2)** गुमराह पेशवा **(3)** शराबी **(4)** माँ बाप का न फरमान **(5)** चुगुल खोर **(6)** झूटी गवाही देने वाला **(7)** ज़कात न देने वाला **(8)** सूद खोर(खाने)वाला **(9)** ज़ालिम **(10)** और बे नमाज़ी,मगर बे नमाज़ी के लिऐ दुगना अज़ाब होगा,और बे नमाज़ी बरोज़े क़यामत इस हाल में उठेगा,कि उसके दोनो हाथ उसकी गरदन में बंधे होंगे,और फरिश्ते उसकी पिटाई कर रहे होंगे,जन्नत उस से कहेगी, तू ना मुझ से है।और ना मै तुझ से,और जहन्नम कहेगा,मे तुझ से हूँ। और तु मुझ से, क़सम है अल्लाह अज़्ज़ो वजल की यकीनन में तुझे शदीद तरीन अज़ाब दूँगा,उस वक़्त उसके लिऐ दोज़ख का दरवाज़ा खुल जाऐगा,और वो तेज़ रफतार तीर की मानिन्द दोज़ख मे दाखिल हो जाऐगा.

प्यारे इस्लामी भाइयो व बहनों .ऊपर मेने वो हदीसे ज़िक्र की हैं।जिनमे बे नमाज़ियों के बारे मे ज़िक्र किया गया है।और अब मै नीचे वो हदीसे ज़िक्र कर रहा हूँ।जो नमाज़ मे सुसती करने वालों के बारे मे हैं।.

***हदीस शरीफ :*1.**नबीये पाक साहिबे लोलाक सय्याहे अफलाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फरमाने इबरत निशान है।.जो नमाज़ के मुआमले में सुसती बरतेगा .अल्लाह अज़्ज़ो वजल उसे पंद्रा किस्म की सज़ायें देगा.

उनमे छैःसज़ायें दुनिया मे तीन मौत के वक़्त.तीन क़ब्र में .और तीन क़ब्र से निकने के बाद देगा.दुनिया की छैः सज़ायें ये हैं।

(1) अल्लाह अज़्ज़ो वजल उसकी उम्र से बरकत ज़ाइल (खत्म) कर देगा.

(2) अल्लाह अज़्ज़ो वजल उसके चहरे से नेक लोगों जैसी नूरानियत छीन लेगा.

(3) अल्लाह अज़्ज़ो वजल उसके किसी अमल का अजरो सवाब नही देगा (4) उसकी कोई दुआ आसमान तक बुलंद ना होगी

(5) अल्लाह अज़्ज़ो वजल लोगों के सामने उसे ज़लीलो खुआर करेगा

(6) नेक लोगों की दुआ में उसका कोई हिस्सा न होगा

★ मौत के वक़्त तीन सज़ायें ★

(7) ज़लील होकर मरेगा

(8) भूका मरेगा

(9) मरते वक़्त इतनी सख़्त प्यास लगेगी कि अगर उसे सारे दरयाओं का पानी भी पिला दिया जाऐ तो प्यास न जाये

★ क़ब्र की तीन सज़ायें ★

(10) उसकी क़ब्र तंग करदी जाऐगी और उसे क़ब्र इस कदर भेचेंगी (दबाऐगी)कि उसकी पसलियाँ टूट फूटकर एक दूसरे में पेवस्त (मिल जाऐगी)हो जाऐंगी. **(11)** उसकी क़ब्र में आग भड़काई जाऐगी जिसमें वो उलट पलट होता रहेगा.**(12)** उस पर क़ब्र में एक अज़दहा मुसल्लत करदिया जाऐगा जिसका नाम अशशुजाउल अक़रअ(गंजा साँप)जो सख़्त ज़हरीला होता है।. उसकी आँखें आग की और नाखून लोहे के होंगे हर नाखून की लंबाई एक दिन की मुसाफत (दूरी)के बराबर होगी वो बिजली की तरह कड़क कर कहेगा में अशशुजाउल अक़रअ(गंजा साँप हूँ।)मुझे मेरे रब अज़्ज़ो वजल ने हुक्म फरमाया है।कि तुझे सुब्हु की नमाज़ जाए (छोड़ने) करने के जुर्म में सुब्हा ता तुलूऐ।आफताब नमाज़े ज़ोहर ज़ाऐ करने पर ज़ोहर त असिर नमाज़े असिर ज़ाए करने पर असिर त मग़रिब नमाज़े मग़रिब ज़ाए करने पर मग़रिब त इशा नमाज़े इशा ज़ाऐ करने पर इशा त सुब्ह मारता है।और जब जब वो एक ज़र्ब लगाऐगा तो मुर्दा सत्तर हाँथ ज़मीन में धंस जाऐगा फिर वो अज़दहा अपने नाखून जमीन में गाड़ कर उसको निकालेगा तो ये अज़ाब उस

पर क़यामत तक होता रहेगा.

★ क़ब्र से उठने के बाद तीन सज़ाऐं ★

13—अल्लाह अज़्ज़ु वजल जहन्नम की आग का एक बादल उसके चहरे के सामने मुसल्लत फरमाऐगा जो उसको जहन्नम की तरफ हाँक कर ले जाऐगा **14**—हिसाब के वक़्त अल्लाह अज़्ज़ो वजल उसकी तरफ गज़बनाक नज़र डालेगा जिस से उसके चहरे का गोश्त झड़ जाऐगा

15—उसका हिसाब सख़्ती से लिया जाऐगा अल्लाह अज़्ज़ो वजल उसको दोज़ख में ले जाने का हुक्म सादिर फरमाऐगा

(मुलख़्ज़ अज़ कुर्रतुल उयून व फैज़ाने सुन्नत स.983 उर्दू)

हदीस शरीफ :2. हज़रते बरा इब्ने आज़िब रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु ने अदाउस सलात वत तबाउश शहवाति फ सौफा युलकूना ग़य्यन मे लफ्ज़ ग़य्यन के बारे मे फरमाया कि ग़य्यन जहन्नम की एक वादी है।हज़रते इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु फरमाते हैं।कि उसमे वही लोग जाऐंगे जिन्होंने अपनी नमाज़ों के औक़ात खो दिऐ हैं।.

हदीस शरीफ :3. हज़रते अब्दुल्लाह बिन अमर बिन अल आस रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु ने फरमाया कि एक रोज़ रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नमाज़ का ज़िक्र फरमाया और इरशाद किया कि जो नमाज़ की निगेह दाश्त करेगा. उसके लिऐ नमाज़.नूर और हुज्जत और क़यामत के दिन नजात का ज़रिया होगी और जो उसकी निगेह दाश्त ना करेगा.उसके लिऐ नमाज़ ना नूर होगी.और ना हुज्जत.ना दोज़ख से नजात का ज़रिया होगी.वो दोज़ख के अन्दर फिरऔन व हामान.और उबई बिन खल्फ के साथ होगा.

(ग़ुनयतुत तालिबीन स0.513 व दीग़र आम ए कुतुब)

हदीस शरीफ :4. मेराज की रात.सरवरे काएनात.शाहे मौजूदात सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने एक मनज़र ये भी मुलाहिज़ह फरमाया.कुछ मर्दों और औरतों के सरों पर फरिशते ज़रबें लगाते थे और चौट से उनके दिमाग़ इस तरह बहते थे.जिस तरह बड़ी नहर बहती हो.और वो दर्द से चीखते हुऐ।कहते थे. हाऐ अफसोस!हाऐ हलाकत!आप सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की खिदमते सरापा रहमत मे अर्ज़ किया गया.ये लोग बे वक़्त नमाज़

पढ़ते थे.(मुलख्खज़ अज़ दुर्रतुन नासहीन व फैज़ाने सुन्नत स0.965 उर्दू)

हदीस शरीफ :5. हजरते सैय्यदुना अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हुमा से मर्वी है।कि क़यामत के दिन एक शख्स को अल्लाह अज़्ज़ो वजल की बारगाह मे खड़ा किया जाऐगा.अल्लाह तबारको तआ़ला उसे जहन्नम मे जाने का हुक्म फरमाऐगा.वो अर्ज़ करेगा या अल्लाह अज़्ज़ो वजल मुझे किस लिऐ जहन्नम मे भेजा जा रहा है।इरशाद होगा.नमाज़ों को उनका वक़्त गुज़ार कर पढ़ने और मेरे नाम की झूँटी क़समे खाने की वजेह से.

(मुकाशफतुल कुलूब व फैज़ाने सुन्नत स0.966 उर्दू)

हदीस शरीफ :6. सरकारे मदीना सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबाए इकराम अलैहिमुर रिज़वान से फरमाया.आज रात दो शख्स(यानी जिब्राइल अलैहिस्सलाम और मीकाईल अलैहिस्सलाम)मेरे पास आऐ और मुझे अर्दे मुकद्दसा मे ले आऐ.मैने देखा कि एक शख्स लेटा है।और उसके सिरहाने एक शख्स पत्थर उटाऐ खड़ा है।और पय दर पय पत्थर से सर कुचल रहा है।हर बार कुचलने के बाद सर फिर ठीक हो जाता है।मैने फरिश्तों से कहा.ये कौन है।उन्होंने अर्ज़ किया.आगे तशरीफ ले चलिऐ (मज़ीद मनाज़िर दिखाने के बाद)फरिश्तों ने अर्ज़ किया कि पहला शख्स जो आप सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने देखा ये वो था जिसने कुरआन याद करके छोड़ दिया था. और फर्ज़ नमाज़ों के वक़्त सो जाने का आदी था.इसके साथ ये बरताव क़यामत तक होगा. (मुलख्खज़ अज़ बुखारी शरीफ)

★ कब्र में आग के शोले ★

एक शख्स की बहिन फौत हो गई,जब उसे दफ्न करके वापिस लौटा तो याद आया कि रक़म की थैली क़ब्र में गिर गई है।चुनाँचे वो अपनी बहिन की क़ब्र पर आया और उसको खोदा ताकि थेली निकाल ले उसने देखा कि बहिन की क़ब्र में आग के शोले भड़क रहे हैं। चुनाँचे उसने जूँतूँ कब्र पर मिटट्ी डाली और ग़मगीन रोता हुआ माँ के पास आया और पूछा,प्यारी अम्मी जान! मेरी बहिन के आमाल कैसे थे? वो बोली बेटा क्यों पूछते हो ? अर्ज़ कि मेने अपनी बहिन की क़ब्र में आग के शोले भड़कते देखे हैं। ये सुनकर माँ भी रोने लगी और कहा, अफसोस,तेरी बहिन नमाज़ में सुसती करती थी,और नमाज़ के औक़ात गुज़ार कर पढ़ा करती थी(यानी नमाज़ क़ज़ा करके पढ़ा करती थी)

(मुकाशफतुल कुलूब वगैरह)

इमाम अहले सुन्नत मौलाना शाह अहमद रज़ा खान अलैहिर्र रहमतो रहमान फरमाते हैं।अगर किसी पर साठ साल की नमाजें बाक़ी हों और वो सारी नमाज़े क़ज़ाए उमरी करने की नियत से घर से बाहर क़दम रख्खे और मौत आ जाऐ।तो इंशा अल्लाह अज़्ज़ो वजल उसकी मग़फिरत हो जाऐगी.क़ुरआन मजीद मे है।कि जब जन्नती जहन्नमियों से पूछेंगे कि तम्हें कौन सा अमल जहन्नम मे ले गया तो वो निहायत ही हसरतो अफसोस के साथ जवाब देंगे.लम नकु मिनल मुसल्लीना0वलम नकुन नुतइमुल मिसकीना0वकुन्ना नखूदु मअ्ल खाइदीना0 व कुन्ना नुकज़्ज़िबु बि यौमिद्दीनी0हत्ता अतानल यक़ीनु0 .तर्जुमा ए कंजुल ईमानःहम नमाज़ ना पढ़ते थे और मिसकीन को खाना ना देते थे .और बेहूदा फिक्र वालों के साथ बेहूदा फिक्रें करते थे और हम इंसाफ के दिन को झुटलाते रहे यहाँ तक कि हमें मौत आई.

(अल मदस्सिर आयतः47.कंजुल ईमान)

★ हज़रते इमाम ग़ज़ाली का क़ौल ★

हज़रते इमाम ग़जाली मुकाशफतुल कुलूब मे तहरीर फरमाते हैं।कि जिसकी नमाज़े दुरुस्त (सहीह)ना हों उसे चाहिऐ की अपनी नमाज़े दुरुस्त करले वरना मैदाने मेहशर में उसकी वो सब नमाजे जिसे वो पढ़कर गया एक काले कपड़े में लपेट कर मुंह पर मार दी जाऐंगी। (मुकाशफतुल कुलूब वगैरह)

★ होलनाक कुंआ ★

ग़ई जहन्नम की एक खौफनाक वादी का नाम है।उसकी गहराई सबसे ज़्यादा उसमे एक होलनाक कुंआ है।जिसका नाम हब. हब है।जब जहन्नम की आग बुझने पर आती है।अल्लाह अज़्ज़ो वजल उस कुऐं को खोल देता है।जिस से वो बद सतूर भड़कने लगती है।ये होलनाक कुंआ बे नमाज़ियों ज़ानियों.शराबियों सूद खोरों और माँ बाप को ईज़ा (तकलीफ)देने वालों के लिऐ है।. (बहारे शरियत व फैज़ाने सुन्नत स0.968 उर्दू)

★ नमाज़ की फरज़ियत का मुनकिर ★

अगर कोई शख्स नमाज़ की फरज़ियत का मुनकिर है।और नमाज़ तर्क करे तो काफिर हो जाता है।और उसका कत्ल वाजिब हो जाता है।(इमाम अहमद रज़ि अल्लाहु तआ्ला अन्हु के मज़हब मे)अगर फरज़ियत का अक़ीदा रखता

है।लेकिन बे परवाई और सुसती के बाइस नमाज़ छोड़दी है।.नमाज़ के लिऐ उसको बुलाया गया मगर उसने नही पढ़ी और उस नमाज़ के बाद वाली नमाज़ का वक़्त भी तंग हो गया उस वक़्त ये शख्स भी काफिर हो जाऐगा. और दोनों सूरतों मे उस पर मुरतद का हुक्म होगा.तीन रोज़ तक उस से तौबा कराई जाऐगी अगर वो तौबा ना करेगा तो उस को तलवार से क़त्ल कर दिया जाऐगा.उसका माल ज़ब्त करके बैतुल माल मे दाखिल कर दिया जाऐगा.और उसके जनाज़े की नमाज़ नही पढ़ी जाऐगी ना मुस्लिम क़ब्रिस्तान मे उसको दफन किया जाऐगा.

(गुनयतुत तालिबीन स0.515 व दीग़र आम ए कुतुब)

प्यारे इस्लामी भाइयों व बहनों :ये एक ऐसी नात है।जिसे आप ग़ौर से सुनेंगे तो आपको वाक़ई इबरत हासिल होगी.

☆ *हश्र के बारे मे हैरत अंगेज़ नात पाक* ☆

सामने सीरते मुसतफा दर्स है।रहबरी के लिऐ।
फिर हमें और क्या चाहिऐ।दोसतो ज़िन्दगी के लिऐ।
हश्र मे हम कहाँ तुम कहाँ जब ना होगा कोई मेहरबाँ
तो बनके रहमत हुज़ूर आऐंगे अपने हर उम्मती के लिऐ।
कर यक़ी तू मेरी बात पर कैसे होगा अंधेरा वो घर
आही जाऐंगे खैरुल बशर क़ब्र मे रोशनी के लिऐ।
बाग़े जन्नत की पुरवाइयाँ सब्ज़े गुम्बद की पर छाइयाँ
कर चुका है।खुदा सब अता अपने हर जन्नती के लिऐ।
हाँथ आने को कुछ भी नही बस मिलेगी तो दो गज़ ज़मीं
जान फिर क्यों परेशान है।आदमी आदमी के लिऐ।
छोड़ दुनिया की हर रंजो ग़म वो करेंगे निगाहे करम
तू भी अय राही बेनवा जाऐगा हाज़री के लिऐ।

शायरे इस्लाम:राही साहब

☆ *एक सहाबी की नमाज़* ☆

हुज़ूर अलैहिस सलाम अभी नमाज़ से फारिग़ हुऐ थे कि एक बदरी सहाबी आऐ और नमाज़ पढ़ी और बारगाहे रिसालत मे हाज़िर हुऐ तो हुज़ूर ने फरमाया कि जाओ फिर से नमाज़ पढ़ो वो गऐ और उन्होंने फिर से नमाज़

पढ़ी फिर दुबारा से हाज़िर हुऐ तो हुजूर ने फरमाया कि जाओ फिर से नमाज़ पढ़ो वो गऐ और उन्होंने फिर से नमाज़ पढ़ी फिर तीसरी बार हाज़िर हुऐ और अर्ज़ की मेरे माँ बाप आप पर कुरबान हम नमाज़ किस तरह पढ़ें तो आपने फरमाया कि जिसके रुकू व सुजूद दुरुस्त नही उसकी नमाज़ नही यानी नमाज़ सही करलो.

★ *बे नमाज़ी के बारे मे एक इबरतनाक रिवायत* ★

एक रिवायत मे है।कि मदीनऐ मुनव्वरह मे एक आराबी (देहाती) थे जिनका बहुत बड़ा खजूरों का बाग़ था.और उस बाग़ मे बहुत खजूर होते थे.अचानक एक दिन ऐसा हुआ कि एक खजूर के पेड़ की बजेह से तमाम दरख्त सूख गऐ।तो वो आराबी नबीऐ अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह मे हाज़िर हुऐ और पूरा वाकिया अर्ज़ किया तो नबीऐ अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे फरमाया कि जाओ अली को बुला लाओ फिर वो आराबी हज़रते अली रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु को बुला लाऐ तो नबीऐ अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अय अली तुम इनके बाग़ मे चले जाओ और जब पहुँचना तो तुम्हें वहाँ एक दरख्त मिलेगा उसकी पहचान ये होगी और फिर तुम उस दरख्त मे अपने पैर से एक ठोकर मार देना और जूँही तुम उस पेड़ के ठोकर मारोगे फौरन उस से एक छोटी सी हड्डी गिरेगी हड्डी का गिरना होगा तमाम पेड़ हरे भरे हो जाऐंगे और खजूर भी लग आऐंगे. लिहाज़ा हजरते अली रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु जब उन आराबी के बाग़ मे पहुँचे तो आपने उस दरख्त को पाया जैसा कि नबीऐ अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसके बारे मे निशान देही फरमाई थी फिर आपने उसमे पैर से ठोकर जो लगाई तो वाक़ई मे एक छोटी सी हड्डी उस पेड़ से गिरी हड्डी का गिरना था तमाम पेड़ हरे भरे हो गऐ और उनमे आपके हुक्म के मुताबिक़ खजूर भी लग आऐ थे ये मंज़र देख कर वो आराबी बहुत खुश हुऐ उन खजूरों से उनका कारोबार फिर से चलने लगा.लिहाज़ा कुछ दिनों के बाद एक दिन वो आराबी दूबारा नबीऐ अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह मे हाज़िर हुऐ और अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह!हमारे माँ बाप आप पर कुरबान ज़रा आप ये तो बताऐं कि मेरा बाग़ किस वजेह से सूख गया था नबीऐ अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे फरमाया

कि रहने दो उन्होंने जब ज़्यादह इसरार किया तो नबीऐ अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अय अअ्राबी सुनों तुम्हारे गाँव के क़रीब मे एक बे नमाज़ी का इन्तिक़ाल हो गया था लिहाज़ा उसकी किसी ने नमाज़े जनाज़ह नहीं पढ़ी और उसकी लाश को क़ौम के घूरे पर लाकर डाल दिया गया तो उसकी लाश पर कौआ और गिध आसमान से उतर आऐ।और नबीऐ अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अय अअ्राबी सुनों कौआ वहुत मतलबी परिन्दा होता है।लिहाज़ा उसने उस बे नमाज़ी की एक छोटी सी हड्डी ली जिसमे थोड़ा गोश्त लगा हुआ था और वो कौआ आकर तुम्हारे बाग़ मे एक खजूर के दरख्त पर आ बैठा और उस हड्डी मे जितना गोश्त लगा हुआ था उसको खाकर और हड्डी उसी दरख्त पर छोड़कर उड़ गया. अब किया था उस छोटी सी हड्डी पर अल्लाह अज़्ज़ो वजल की इतनी लाअ्नत और मलामत और क़हरो गज़ब नाज़िल हो रहा था जिसकी वजेह से तुम्हारा पूरा खजूरों का बाग़ सूख गया और मज़ीद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अय अअ्राबी जब इतनी सी हड्डी पर इतना अज़ाब हो सकता है।तो उस बे नमाज़ी की पूरी लाश पर कितना अज़ाब हो रहा होगा.

★ दूसरी रिवायत ★

हमारे उसताज़ हज़रते अल्लामा व मौलाना तन्ज़ीफ अहमद मिस्बाही मद्द ज़िल्लाहुल आली ने मुझ से एक रिवायत बयान की थी और वो ये है।कि जो शख्स जान बूझकर एक नमाज़ (फजिर) छोड़ कर मर जाता है।तो उसकी क़ब्र मे आग के बड़े बड़े बम फूटते हैं।और फज़िर से लेकर ज़ोहर तक ये अज़ाब उसकी क़ब्र मे होता रहता है।और अगर ज़ोहर छोड़कर वो शख्स मरा है।तो ज़ोहर से असिर और अगर असिर छोड़कर वो शख्स मरा है।तो असिर से मग़िरब.और अगर मग़िरब छोड़कर वो शख्स मरा है।तो मग़िरब से ईशा और अगर ईशा छोड़कर वो शख्स मरा है।तो ईशा से फज़िर तक .अब अय इंसान ज़रा तू ग़ौर कर ले कि तेरा ये नर्म नाज़ुक जिस्म जो एक अगर बत्ती की चिंगारी बरदाश्त नही कर पाता क़ब्र मे पूरे बम का धमाका बरदाश्त करने की ताक़त तुझमे है।नही तो फिर ग़ौर कर तुझे किस तरफ जाना है।और तू किस तरफ जा रहा है।.इसी तरफ एक शायर ने इशारह किया है।......

बे नमाज़ी हमारा कहा मान लो है।ये हुक्मे खुदा इसको पहचान लो

क्या वहाँ भी कोई चाल चल जाऐगी हश्र मे सारी चर्बी पिघल जाऐगी.

प्यारे इस्लामी भाइयों व बहनों : अब मै बे नमाजियों के बारे मे सहाबाए इकराम व मोहद्दिसीने इकराम के चंद अक़वाल ज़िक्र करने जा रहा हूँ।आप लोग ग़ौर से पढ़े और इबरत हासिल करें।

★ बे नमाज़ियों के बारे मे सहाबा इकराम के अक़वाल (फरमान) ★

सहाबाए इकराम अलैहिमुर रिज़वान का फरमान: सहाबऐ इकराम अलैहिमुर रिज़वान फरमाते हैं।कि जो शख्स नमाज़ पढ़ता था हम उसे मुसलमान जानते थे और जो नमाज़े तर्क करता था हम उसे मुसलमान ही नही मानते थे.

(1) हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु का फरमान : आप रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं।कि जो शख्स जुमे की नमाज़ तर्क करता है।यानी नही पढ़ता है।तो मै चाहिता हूँ।कि मै जाकर उसके घर मे आग लगा दूँ.

(आमऐ कुतुब वगैरह)

(2) हज़रते अनस रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है। कि आका अलैहिस सलाम का कौल है।कि मन तरकस सलाता मुताअम्मिदन फक़द कफारा ज़िहारन यानी जिसने जान बूझकर नमाज़ छोड़ी उसने ऐलानियाँ कुफ्र किया.(तबरानी.मौजब)इमामे आज़म अबू हनीफा रजि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं।कि ये हदीस महिल्ले तरहीब मे है।उसने काफिरों वाला काम किया है।इस लिऐ आप फतवा देते हैं।कि उसे कैद किया जाऐगा.और नमाज़ की पाबंदी का ज़ोर दिया जाऐगा.और वो तौबा करे तो उसको छोड दिया जाऐगा. **(3) हज़रते जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से मरवी एक रिवायत है।** जिसको इमाम अबू दाऊद ने रिवायत किया और इमामे निसाई ने रिवायत किया और दीगर मोहद्दिसीन ने रिवायत किया.आका करीम ने इरशाद फरमाया कि बैनर रजुलि व बैनल कुफरि तरकुस सलात. यानी: आदमी और कुर्फ के दरमियान.नमाज़ छोड़ने का फर्क है।.

(4) हज़रते मुआज़ बिन जबल रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं। जो नमाज़ छोड़ता है।अल्लाह उससे अपना ज़िम्मा उठा लेता है।.

(5) हज़रते अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है। वो फरमाते हैं।ला सहमा फिल इस्लामि लिमन ला सलातहू वला सलाता लिमन ला वुज़आ लहू उस शख्स का इस्लाम मे कोई हिस्सा नही है।जो नमाज़ नही

पढ़ता और उस शख्स का नमाज़ मे कोई हिस्सा नही जो वुजू नही करता नमाज़ के बिगैर इस्लाम मे कोई हिस्सा नही और वुजू के बिगैर नमाज़ नही.

(6) हजरते अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है। जिसको इमाम इब्ने माजा व इमाम निसाई ने रिवायत किया है।वो हुजूर से रिवायत करते है।बड़ी मशहूर रिवायत है।हुजूर ने इरशाद फरमाया इन्ना अव्वला मा युहासबु बिहिल अबद बि सलातिहि फइन सलाहत फक़द अफलाहा व अनजहा व इन फक़ादत फक़द खाबा व खसारा.फरमाया क़यामत के दिन बंदे से सबसे पहला हिसाब नमाज़ का लिया जाऐगा.अगर उसकी नमाज़ ठीक होगी तो वो फलाह पाऐगा.अगर पहला कौल ठीक है।तो वो कामयाब हो गया.व अनजहा और वो नजात पा गया.वइन फसादत खाबा व खसारा. और अगर पहला कौल ठीक ना हुआ तो वो ज़लीलो रुसवा हो गया.

(7) हजरते बुरैदा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु अपने वालिद से रिवायत करते हैं। और वो हुजूर से रिवायत करते हैं।कि हुजूर अलैहिस सलाम ने फरमाया इन्ना अहदल लज़ी बैनना व बैनहुम अस सलात व मन तरकहा फक़द कफारा हमारे और इन लोगों के दरमियान जो मुआहिदा है।वो नमाज़ का है।जिसने नमाज़ को छोड़ दिया उसने कुफ्र किया.यानी हमारा और उनका मुआहिदा बाक़ी नही रहता.

(8) हुजूर अलैहिस सलाम ने फरमाया है। कि जब मै मेराज की रात को गया तो मेरा गुज़र एक कौम पर से हुआ आपने देखा कि भारी पत्थर से उनका सर कुचला जा रहा है।और पत्थर थोड़ी दूर चला जाता है।सर सही हो जाता है।फिर से वो पत्थर मारा जाता है।आप फरमाते हैं।या जिबरीलो मन हाउलाऐ कि मैने जिबरील से पूँछा कि ये कौन लोग हैं।कि इनके सर पत्थरों से कुचले जा रहे हैं।काला हाउलाइल लजीना तखाक़लत रुऊसहुम अन सलातिल मकतूबा.कहा कि ये वो बद नसीब लोग हैं।जो नमाज़े पंजगाना फर्ज़ भी नही पढ़ा करते थे.आज इनके सर कूटे जा रहे हैं।ये थोड़ी सी जिन्दगी है।कितना बद नसीब है।वो शख्स जिसको सजदा नसीब नही होता.

(9) हजरते मुआज़ इब्ने जबल रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु से तवील रिवायत है। हुजूर अलैहिस सलाम ने फरमाया कि जो शख्स नमाज़ छोड़ता है।व काना यौमल क़यामति मअ क़ारूना व फिरऔना व हामाना व उबई इब्ने खलफ.जो

नमाज़ तर्क करता है।क़यामत के दिन वो क़ारून के साथ.फ़िऔन के साथ. हामान के साथ.उबई बिन खलफ के साथ खड़ा कर दिया जाऐगा.जिस सफ मे अल्लाह के दुशमन खड़े हुऐ होंगे बे नमाज़ी को उस सफ मे खड़ा कर दिया जायेगा.कितनी रुसवाई कितनी ज़िल्लत कोई बंदा ये गवारा करता है।कि मुझे उस सफ मे खड़ा कर दिया जाऐ जिसमे दुशमनाने खुदा खड़े हैं।मेरा कोई भाई या मेरी कोई बहिन या मेरा कोई दोस्त.अहबाब.और ना कोई मेरी माँ इस बात को गवारा करती है।कि उसको दुशमने खुदा की सफ मे खड़ा कर दिया जाऐ। (आमए कुतुब वगैरह)

(10) सहाबा ए इकराम अलैहिमुर रिज़वान फरमाते हैं। हम किसी अमल के तारिक़ को काफिर नही समझते हैं।सिवाऐ नमाज़ के तारिक के.

☆ बे नमाज़ियों के बारे मे मोहद्दिसीन इकराम के इरशादात ☆

(1) हज़रते इमामे आज़म अबू हनीफा रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु फरमाते हैं।
बे नमाज़ी को क़त्ल तो नही किया जाऐगा.हाँ अल बत्ता हाकिमे वक़्त के ऊपर है।कि वो उसको क्या सज़ा देगा.और तौबा के लिऐ उसको ज़ोर दिया जाऐगा अगर वो तौबा करले वरना उसको क़ैद रखा जाऐगा.

(2) जो शख्स नमाज़ को जानता है।और फिर सुसती की वजेह से नही पढ़ता तो उसके बारे मे **हज़रते इमाम इसहाक़ व हज़रते इमाम अहमद रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हुमा फरमाते हैं।** कि ऐसा शख्स काफिर है।और उसको क़त्ल करना वाजिब है।.

(3) हज़रते इमाम मालिक व हज़रते शाफई रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हुमा क़ौल (कहते) हैं। उसको क़त्ल किया जाऐगा और बा तौरे हद क़त्ल किया जाऐगा.

(4) हज़रते इमाम इब्ने माजा रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु इन अल्फाज़ के साथ बयान किया है। बैनल कुफरि वल इस्लामि तरकुस सलाम ईमान और कुफ्र के दरमियान नमाज़ का तर्क करना है।

(5) हज़रते इमाम बुखारी रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु ने रिवायत नक़्ल की है। कि हुज़ूर ने इरशाद फरमाया मन तराकस सलातल असरा फक़द हबिता अअ्मालुहु: जिसने असिर की नमाज़ छोड़ी अल्लाह उसके अअ्माल बरबाद कर देता है।

पहला फतवा:हज़रते गौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं।कि मैने कुरआन को देखा और हदीसों को देखा और मै इस नतीजे पर आया मन तराकस सलाता मुताअम्दिन वलव वाहिदा ला युसल्ला अलैह मै फतवा देता हूँ।कि अगर किसी ने जान बूझकर एक नमाज़ को छोड़ा और फिर मर गया तो आप फरमाते हैं।कि मै उसके जनाज़े की नमाज़ भी नहीं पढूँगा.

दूसरा फतवा:हज़रते गौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं।मन तराकस सलाता मुताअम्दिन वलव वाहिदल ला यदखुलू फी मक़ाबिरल मुसलिमीन. जो शख्स जान बूझकर एक फर्ज नमाज़ को छोड़ता है।आप फरमाते हैं।कि मेरा बस चले उसे मुसलमानों के क़ब्रिस्तान मे दफन भी ना होने दूँ.

तीसरा फतवा:हज़रते गौसे आज़म रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं।मन तराकस सलाता मुताअम्दिन वलव वाहिदा लैसा लहू फी इस्लामिना फी.मै फतवा देता कि अगर किसी ने जान बूझकर एक फर्ज़ नमाज़ को छोड़ा अब मुसलमान होने से उसका कोई वासिता बाक़ी नही रह गया यानी उसका इस्लाम और मुसलमानो से कोई लेना देना बाकी नही रह गया.

हज़रते सुल्तान बाहू रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं।कि बे नमाज़ी से खिन्ज़ीर (सुअर)भी पनाह माँगता है।.

हज़रते शैख सअदी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं।कि बे नमाज़ी को क़र्ज़ ना दो जो रब का क़र्ज़ा अदा नही कर सकता वो तुम्हारा क़र्ज़ा कैसे अदा करेगा. (आम ए कुतुब वगैरह)

आदमी और कुफ्र के दरमियान तरकुस सलात है।बन्दऐ मोमिन और बन्दऐ काफिर के दरमियान तरकुस सलात है।जो नमाज़ पढता है।वो मोमिन है।और जो नमाज़ नही पढता वो दीगर अइम्मा के नज़दीक काफिर है।

प्यारे इस्लामी भाइयों व बहनों :अब मै आप के सामने बे नमाज़ी के बारे मे चंद वाक़यात ज़िक्र करने जा रहा हूँ।जिसे आप ग़ौर से सुनेंगे तो आपको वाक़ई इबरत हासिल होगी

☆ बे नमाज़ियों के इबरतनाक वाक़्यात ☆

(1) हज़रते उमर रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु के दौरे खिलाफत का ये वाक़्या है।कि उस वक़्त मदीने शहर मे एक ऐसी बुढ़िया रहती थी जो बेहद ग़रीब

और तंगदस्त थी एक बार वो खाना बनाने के लिऐ कड़वा तेल दुकान पर लेने गई. तेल लेकर अपने घर की तरफ वापिस हो रही थी इतने में उसका पैर फिसला और पूरा तेल ज़मीन पर गिर गया और फौरन ज़मीन उसका पूरा तेल पी गई अब उसके पास इतने रुपऐ नही थे कि वो दोबारा दुकान पर जाकर तेल खरीदे लिहाज़ा उसने ये शिकायत अपने दौर के खलीफा अमीरुल मोमनीन हज़रते उमर रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु से की और कहा कि आप उस जगह पर चलकर मेरा तेल ज़मीन से वापिस करवादें.उस बुढ़िया की ये दरख्वास्त सुनकर आपने उस बुढ़िया को अपने साथ लिया और उस जगह पहुँचे और फिर आपने उसी जगह अपने हाँथ का अंगूठा लगाया और फरमाया कि अय ज़मीन तू इस बुढ़िया का पिया हुआ तेल वापिस करदे ?तो ज़मीन से ये अवाज़ आई कि अय उमर! मै पी हुई चीज़ कभी वापिस नही करती ?दुबारा फिर आपने वही जुमला दोहराया कि अय ज़मीन तू इस बुढ़िया का पिया हुआ तेल वापिस करदे ? तो ज़मीन से फिर वही अवाज़ आई कि अय उमर! मै पी हुई चीज़ कभी वापिस नही करती ? फिर हज़रते उमर रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु ने जब ये देखा कि ये ऐसे वापिस करने वाली नही है।तो आपने फरमाया कि अगर तू वापिस नही करती तो ठीक है।मै तेरे अन्दर एक बे नमाज़ी को दफन करूँगा तो फौरन ज़मीन ने ये कहकर पूरा तेल वापिस कर दिया कि अय उमर!मै पिया हुआ तेल वापिस तो कर देती हूँ।मगर मेरे अन्दर किसी बे नमाज़ी को दफन मत करना.. अल्लाहु अकबर.**दर्से इबरतः** इस वाक़ऐ से हमे तीन सबक़ मिलते हैं।**(1)** अल्लाह अपने बन्दों को कितना पावर दे देता है।कि वो जो चाहे करें.**(2)** हर चीज़ को उनका ताबऐ फरमान बना देता है।**(3)** बे नमाज़ी से ज़मीन किस क़दर पनाह माँगती है।कि पिया हुआ तेल भी वापिस कर दिया.अब ज़रा वो लोग गौर करें जो नमाज़ नही पढ़ते.

(हुसूले मशक़्क़ते इल्मे दीन वगैरह व दीगर आम ए कुतुब)

★ चालीस दिन की बरकत चली गई ★

(2) हज़रते गौसे पाक रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु के दौर का ये वाक़्या है।कि एक आपका मुरीद हाज़िरे खिदमत हुआ और अर्ज़ किया हुज़ूर मेरे यहाँ ना जाने क्या हो गया है।कि चलीस दिन से ग़रीबी पे ग़रीबी आती चली जा रही है।तो हज़रते गौसे पाक रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु ने फरमाया कि अय मेरे

मुरीद तेरे घर के दरवाज़े पर पर्दा नही है।जा उस पर पर्दा डाल दे बरकत शुरू हो जाऐगी लिहाज़ह वो शख्स अपने घर पर पहुँचा और घर के बाहिरी दरवाज़े पर पर्दा डाल दिया पर्दा का डालना था कि गई हुई बरकत फिर से वापिस आ गई अब वो शख्स बड़ा परेशान हुआ और सोचने लगा कि ये जो काम आज किया है।इसको पहले ही कर लिया होता फिर वो शख्स ये बात पूँछने के लिऐ गया और अर्ज़ करने लगा कि हुज़ूर इस बरकत के उठ जाने की वजेह क्या थी जिसकी वजेह से मेरे घर से बरकत उठा ली गई ताकि मुझे आईन्दह परेशान ना होना पड़े हज़रते गौसे पाक रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु ने फरमाया अय शख्स तेरा दरवाज़ा खुला हुआ था और बाहर से एक बे नमाज़ी गुज़र रहा था जिसके ऊपर अल्लाह तआ़ला की लअ़नत बरस रही थी उसने अपनी नहूसत वाली नज़र से तेरे घर के अंदर निगाह डाली उसकी नहूसत वाली नज़र का घर मे पहुँचना था कि अल्लाह रब्बूल इज़्ज़त ने तेरे घर से चालीस दिन के लिऐ खैरो बरकत उठाली.

★ हज़रते वारिसे पाक रज़ि अल्लाहु तआ़ला उन्हु का वाक़िया ★

(3) आप रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु ने कमो बेश सतरह हज किऐ हैं।कि उनमे से पाँच हज पैदल किऐ और बाकी पानी वाले जहाज़ से हज किऐ हैं।एक मरतबा की बात है।कि जब आप पैदल आखिरी हज के लिऐ।जा रहे थे तो आप ने ये दर्दनाक वाक़्या बयान किया जिसे सुनकर जिस्म के रोंगटे खड़े हो जाते हैं।और वो वाक़्या ये है।कि आप फरमाते हैं।कि जब मे हज के लिऐ अपने घर से चला तो रासते मे एक ऐसे गाँव से मेरा गुज़र हुआ कि उस गाँव के हर घर का ये हाल था कि उसमे कोई ना कोई परेशान है।कोई बीमारी मे मुबतिला है।कोई किसी मर्ज़ मे मुबतिला है।और साथ ही साथ उनके खेत और खलियान सब बरबाद पड़े हुऐ थे.आप फरमाते हैं।कि उस गाँव मे एक नेक शख्स से मेरी मुलाक़ात हुई जो कि मुझे अपने घर ले गया और उसने मेरी बहुत खिदमत की.फिर जब नमाज़े असिर का वक़्त हुआ तो मेने उस से कहा कि भाई इधर कोई मस्जिद है।तो उसने अर्ज़ की हाँ इस गाँव के किनारे एक मस्जिद है।जिसमे गाँव का कोई भी शख्स कभी जाता नही.तो आपने फरमाया कि चलो हम उस मस्जिद मे चलते हैं।और चलकर उसमे नमाज़ अदा करेंगे.तो आप और वो दोनो उस मस्जिद मे पहुँचे.जब आप

उस मस्जिद मे पहुँचे तो आप फरमाते हैं।कि उसके दरो दीवार पर बडी बड़ी घाँस लगी हुई थी लिहाज़ा आपने अपने नर्म व नाजुक हाँथों से वो घाँस उखाड़ी और फिर मसिजद मे दाखिल हुऐ।और अज़ान दी फिर मै थोड़ी देर के लिऐ मुराकिबे (जिसमे आँखें बंद करने के बाद तमाम वो मुअमिलात सामने आ जाते है।जिसकी वजेह से खराबियाँ आ रही थी या उनका हाल पता चल जाता है।)मे बैठ गया.तो मैने देखा कि मस्जिद के दोनों मीनारे रब अज़्ज़ो वजल की बारगाह मे रो रोकर बद दुआ कर रहे थे और कह रहे थे कि या अल्लाह जिस तरह इस गाँव के लोगों ने मुझे खाली और बरबाद किया है। इसी तरह तू इनके घरों को अपनी रहमतों व बरकतों से खाली और बरबाद करदे.और इनके खेत व खलियान को भी तबाहो बरबाद करदे.ये मीनारो के जुमले सुनकर आप तड़प गऐ।फिर आपने उसके बाद असिर की नमाज़ अदा की और नेकी की दावत आम करने के लिऐ पूरे गाँव मे निकल पड़े और सबको क़रीब बुलाकर इस तरह से दीन की दावत देते जा रहे थे कि अय लोगो हम अल्लाह के आजिज़ बंदे और उसके प्यारे हबीब के अदना से गुलाम हैं।यक़ीनन जिन्दगी बेहद मुखतसर है।अन क़रीब हमे अंधेरी क़ब्र मे उतार दिया जाऐगा और नजात तमाम जहान के पालने वाले खुदा की इत्तिबा व पैरवी मे है।.अल्लाह के वली की जुबान से निकली हुई ये बात लोगों के दिलों मे तीर की तरह असर कर गई.इधर आप आगे बढ़े और खानऐ काबा पहुँचे तवाफ किया और वहाँ से मदीनऐ मुनव्वरह होते हुऐ गुज़रने के बाद जब उस गाँव के क़रीब से गुज़रे तो खयाल आया कि चलो उस गाँव के लोगों को भी देखा जाऐ।कि वो इस वक़्त किस हाल मे हैं।लिहाज़ा जब आप उस गाँव मे पहुँचे क्या देखते हैं।कि हर तरफ पेड़ पौधे लहलहा रहे हैं।और खेत व खलियान सब हरे भरे नज़र आ रहे हैं।और वहाँ के लोग जो पहले बीमारी व क़ल्लाशी मे दिन काट रहे थे अब वो सबके सब खुश हाल ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं।तो आपने वहाँ ज़ोहर की नमाज़ अदा की उस वक़्त पूरी मस्जिद नमाज़ियों से भरी हुई थी ये देख कर आपका दिल बड़ा खुश हुआ.और फिर मुराक़बे मे बैठे तो अब क्या देख रहे हैं।कि वही मस्जिद के दोनों मीनारे जो कल गाँव वालों के हक़ मे बद दुआऐं कर रहे थे आज वो गाँव वालों के हक़ में इस तरह दुआऐं कर रहे थे कि अय अल्लाह

जिस तरह इस गाँव के लोगों ने मुझको भरा है।ठीक इसी तरह तू अपनी रहमतों बरकतों से इनके घरों और दुकानों और खेत और उसकी फसलों को भरदे.इस वाक़्या से ये भी पता चला कि जिस गाँव मे लोग नमाज़ नही पढ़ते वो बरबाद हो जाते हैं।और जो लोग हर हाल मे अपने रबकी इबादत करते हैं।तो अल्लाह उन्हे हर हाल मे खुश और आबाद रखता है।.

प्यारे इस्लामी भाइयो व बहनों. इन तमाम अहादीस व वाक़्यात से हम सबको इबरत हासिल करना चाहिऐ।इन मेसे कुछ सज़ाऐं वो हैं।जो दुनियाँ मे दी जाऐंगी और कुछ वो हैं।जो मरने के बाद क़ब्र मे मिलेंगी और क़ब्र मे गधे के बराबर बिच्छू और ऊँट के बराबर साँप होंगे तो क़ब्र की सज़ाऐं कैसे बरदाशत होंगी.अल्लामा इलियास अत्तार कादरी मदद ज़िल्लाहू आली वसाइले बख्शिस मे फरमाते हैं।. एक मच्छर का भी डंक हमसे सहा जाता नही

क़ब्र मे बिच्छू के डंक कैसे सहूँगा या रब

☆ *एक हैरत अंगेज़ वाक़्या* ☆

(4) एक नाम का मुस्लमान था मगर वो गैर मुस्लिम (हिन्दुओं) के गाँव मे रहने लगा एक दिन अचानक उसको हुकूकुल्लाह व हुकूकुल इबाद को तल्फ करने लगा एक दिन अचानक उसको कुल्लो नफसिन जाइकतुल मौत से आगाही हो गई (उसका इंत्किाल हो गया) अब हिन्दुओं ने उसको गाँव मे रहने की वजेह से नेहलाया धुलाया उसके बाद जनाज़े को लाकर बीच सड़क पर रखदिया और हाँथ बाँधकर खड़े होकर इमाम साहब का इंतिज़ार करने लगे अचानक उनकी नज़र पाँच लोगों पर पड़ी जो कि खुबसूरत चहरे और नूरानी लिबास में मुरस्सा(पहने हुऐ)चले आ रहे हैं।उन्होंने अर्ज़ किया कि हज़रत इसकी नमाज़े जनाज़ह पढ़ा दीजिऐ तो उन्होंने जवाब दिया कि पहले हम उसका चेहरा देखेंगे(जिसकी नमाज़ पढ़ाना है।)तो उन हिन्दुओं ने उसका चेहरा खोल दिया अब उन नेक लोगो ने उसके चहरे पर खूब थूँका उसके बाद फिर चार लोग आऐ उन्होंने भी उसके चेहरे पर थूँका फिर इसी तरह उन्तीस या तीस लोग उसकी तरह आऐ और उन्होंने भी उसके चेहरे पर खूब थूँका उसके बाद दो लोग खूब सूरत चेहरे और दाढ़ी वाले आऐ फिर इन लोगों ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर आप लोग ही इसकी नमाज़े जनाज़ह पढ़ा दीजिऐ तो उन्होने वही सवाल किया कि पहले हमे इसका चेहरा दिखाओ

और उन्होंने उसका चेहरा देखकर नमाज़े जनाज़ह पढ़ादी फिर वो जाने लगे तो उन लोगों ने उन्हें रोक कर पूँछा कि आपके मज़हब में ऐसे ही नमाज़े जनाज़ह पढ़ाई जाती है।. कि पहले पाँच लोंगो ने इसके चहरे पर थूँका फिर चार लोगो ने फिर उन्तीस या तीस लोगों ने फिर आप दोनो ने इसकी नमाज़े जनाज़ह पढ़ाई! इसका क्या मतलब है। ? तो उन्होंने कहा कि सुनो सबसे पहले जो पाँच लोग आऐ वो कोई और नहीं इसकी दिन भर की पाँच नमाज़े थीं जो नूरानी शक्ल में आई उन्होंने जब ये देखा कि इस ने हमे नही पढ़ा तो हम इसकी क्यो पढ़ें! इतना कहकर उसपर लअ्नत मलामत की,फिर चार लोग जो आऐ थे वो महीने के चार जुमे थे लिहाज़ा उन्होंने उस पर मलामत की फिर उन्तीस या तीस लोग जो आऐ! उनसे मुराद रमज़ान शरीफ के महीने के रोज़े थे लिहाज़ा उन्होंने भी उसपर लअ्नत मलामत भेजी उनके बाद जो हम लोग आऐ तो ये ईद और हम बक़रईद हैं।इसने पूरी उम्र भर मे सिर्फ दो नमाज़े पढ़ी थी तो आज इसकी नमाज़े जनाज़ह हो गई वरना इसकी लाश यूँही पड़ी रहती–

सबक़ –प्यारे इस्लामी भाइयो व बहनो अब इस वाक्या से इबरत हासिल करो और ये ना सोचना कि हम भी उसकी तरह नमाज़ नही पढ़ेंगे तो हमारी भी उसकी तरह नमाज़े जनाज़ह पढ़ादी जाऐगी बल्कि थोड़ी देर के लिए ज़रा आप ये सोच लें कि उसकी तो नमाज़े जनाज़ह पढ़ादी गई लेकिन अगर हमारी नही पढ़ाई गई तो लाश कुत्ते और गिध नोच नोच कर खाऐंगे अल्लाह तआ्ला सबको पंज वक़्ता नमाज़ पढ़ने की तौफीक़ अता फरमाऐ आमीन.

☆ *एक बे नमाज़ी से पूरा इलाक़ा वीरान हो गया* ☆

(6) खैतियाँ सूखकर बदल गई.नहरें खुशक हो गई.कोई इंसान नज़र नही आता फूल थे. बुलबुल थी.दरख़्त थे आज कुछ भी नही सन्नाटा है।सुनसान है।सब तबाही ही तबाही है।मेरे मौला ये क्या हो गया सिर्फ तीन साल के अर्से मे.क्या हो गया.ये बसती उजड़ कर तबाह हो गई जवाब आया ये लोग बड़े नेक थे इबादत गुज़ार थें.अल्लाह से मुहब्बत करने वाले थे उनका कोई कुसूर ना था.जब से इस बस्ती के अंदर एक बे नमाज़ी आया और उसने क़दम रखा उस नहर से पानी पी लिया उस बे नमाज़ी की नहूसत से अल्लाह ने नहरों को खुशक कर दिया.नहरें खुशक हुईं तो दरख़्त भी सूख गऐ खेतीयाँ भी सूख

गईं और जब खेतीयाँ सूख गई तो लोग मकानात को छोड़ छोड़कर जाने लगे.और ये इलाका वीरान हो गया खंडरात हो गया.और बताओ अगर किसी बस्ती के अंदर एक बे नमाज़ी आ जाऐ तो बस्ती खंडरात मे बदल जाती है।और जिस बस्ती के अंदर पूरी की पूरी बस्ती बे नमाज़ी हो तमाम के तमाम लोग बे नमाज़ी हां.तो बरकत कैसे होगी वो राहत की सांस कैसे लेंगे.वो इतिमनान की सांस कैसे लेंगे.तो आज लोग सोचते होंगे कि अगर ऐसा है।तो हमारे मकान खंडरात मे क्यों नही बदल जाते है।तो इसके दो जवाब हैं।कि एक ज़ाहिरी परेशानी है।जो दिखती है।तो लोग मदद करते हैं।और दूसरी बातिनी पेरेशानी है।कि जो देखने मे नही आती और दिखती भी है।तो कोई मदद नही कर पाता है।जैसे ज़ाहिरी बुखार.बातिनी लड़ाई झगड़े.

हज़रते अल्लामा व मौलाना सैय्यद अमीनुल क़ादरी के मुख्तसर बयान का खुलासा .बे नमाज़ी की नहूसत

(6) बुज़र्गाने दीन फरमाते हैं।कि पूरी बस्ती नेक हो और सब नमाज़ी हों मगर एक बे नमाज़ी के आने से पूरी बस्ती हलाक हो जाती है।तो जिस बस्ती मे सभी लोग बे नमाज़ी होंगे तो बरकत कहाँ से आऐगी.और आज हाल ये है।कि पूरी की पूरी बस्ती बे नमाज़ी है।और अब हाल तो ये है।कि लोग जुमा के दिन भी नमाज़ को नही पहुँचते लोगों को कारोबार इतना पसन्द हो गया लोगों को दुकानों से इतनी मुहब्बत हो गई लोगों को पैसों से इतनी मुहब्बत हो गई माल माल पैसा पैसा लोग पैसा कमाने के लिऐ एक गाँव से दूसरे गाँव को जाते हैं।और नमाज़ के लिऐ अपने घर से निकलकर मस्जिद तक नही जाते याद रख्खो जब इंसान नमाज़ पढ़ता है।तो अल्लाह उसे खुश हाली भी देता है।उसे तन्दुरस्ती भी अता करता है।उसकी औलाद को नेक भी बनाता है। उसकी औलाद को परहेज़गार भी बनाता है।और उसकी औलाद को फरमा बरदार भी बनाता है।लेकिन जब लोग नमाज़ तर्क कर देते हैं।तो अल्लाह उनपर से बरकत उठाकर गुरबत और ज़िल्लत डाल देता है।ओ माल से मुहब्बत करने वालों और कारोबार से मुहब्बत करने वालों मै तुम से पूँछना चाहिता हूँ।कि तुम कब तक ज़िन्दा रहोगे.माल माल माल दुकान और कारो बार की मुहब्बत मुझे बताओ कौन दुनिया से जाते वक़्त अपनी दुकान या मकान ले गया था जो तुम ले जाओगे.कौन दुनिया से दौलत ले गया जो तुम

ले जाओगे.नादानों वक़्त का सिकन्दरे आज़म 15 से 16 साल की क़लील मुद्दत के अंदर आधे से ज़्यादा दुनिया फतेह करता है।लेकिन 32/साल आठ महीने की उम्र मे जब उसको मौत आने लगी तो उसने वसीयत की.कि जब मै दुनिया से जाऊँ तो मेरे दोनो हाँथ कफन से बाहर कर देना ताकि दुनिया से जाते जाते मै दुनिया को ये पैग़ाम दे सकूँ.कि वक़्त का सिकन्दरे आज़म जिसने आधे से ज़्यादा दुनिया फतेह की.वो भी जा रहा है।तो हाँथ खाली लेकर जा रहा है।अपने कफन मे आमाल के सिवा लेकर क्या जा रहा है।अपने कफन मे अच्छाई या बुराई के सिवा लेकर क्या जा रहा है।.

★ अय इंसान ज़रा तू ग़ौर करले ★

(7) और शैतान के हर फेल (काम)मे धोका है।जैसा कि आप इस वाक़्या से इबरत हासिल करें कि एक मरतबा शैतान सुब्ह के वक़्त हज़रते अमीर मुआ़विया रज़ि अल्लाहु तआ़ल अन्हु के पास आया और कहने लगा कि हुज़ूर उठिऐ और फजिर की नमाज़ पढ़ लीजिऐ।तो आप बेदार हुऐ (उठे) और आपने सोचा कि ये जगाने वाला कोई नेक शख़्स है।तो आपने फरमाया कि तेरा नाम क्या है।?तो वो कहने लगा हुज़ूर आप जल्दी से नमाज़ अदा कर लीजिऐ।वरना वक़्त खत्म हो जाऐगा.ये आपने सुना और फरमाया कि तेरा नाम क्या है।? और आप बा ज़िद हो गऐ।तो उसने जवाब दिया कि हज़रत मै वही इबलीस हूँ।जिसने हज़रते आदम अलैहिस सलाम को जन्नत से निकलवाया तो आप ने फरमाया कि तेरा काम तो नमाज़ को छुड़ाना है।और तुम मुझे नमाज़ पढ़वा रहे हो.ये क्या ?तो उसने अर्ज़ किया कि हुज़ूर पिछले जुमे को आपकी फजिर की नमाज़ छूट गई थी तो आप रज़ि अल्लाहु तआ़ल अन्हु इस क़दर रोऐ थे कि अल्लाह तआ़ला को आपका रोना बुहुत पसन्द आया और उसने आपको एक नमाज़ छूटने की वजेह से सत्तर जमाअ़तो का सवाब अता फरमा दिया था.तो मैने सोचा कि चलो हज़रत को फजिर की नमाज़ पढ़वादूँ तो आपको एक जमाअ़त का सवाब मिल जाऐगा और अगर मैने फिर से ताखीर की तो हज़रत फिर रोऐंगे और फिर अल्लाह तआ़ला उनको सत्तर जमाअ़तो का सवाब अता फरमा देगा.इस लिऐ मै आपको जगाने आ गया.देखो हज़रात कितना बड़ा धोका अब अगर वो नेक काम भी कराऐ तो भी समझ लो कि वो कहीं ना कही आपको धोका दे रहा है।और ये वाक़्या

मेने इधर इस लिऐ लिखा है।ताकि आप शैतान की असली हरकतों को जल्द समझ जाऐं और उसके हर दाँव व पेंच (अय्यारी व मक्कारी) से बचते रहें।एक शायर ने इधर एक शेर कहा है।.

बाज़ आ इंसान वरना उस घड़ी पछताऐगा
जिस घडी तेरा दफतरे आमाल खोला जाऐगा.

★ *शैतान के फरेब से बचो* ★

(8) इबलीस का नाम तो सुना होगा उसने सबसे ज़्यादह इबादत की यानी साढ़े छैः करोड़ साल उसने नमाज़ पढ़ी है।पूरी ज़मीन मे कोई जगह ऐसी नही है।जहाँ उसने सजदा ना किया हो.इस वाक़्ये पर ग़ौर करो एक शख्स के साथ इंसान बनकर उसके साथ मे हो गया और उसकी फजिर की नमाज़ छुड़ा दी यानी इस क़दर बहकाया कि उसने फजिर की नमाज़ छोड़ दी और फिर जब जोहर का वक़्त आया तो वो भी छुड़ा दी.और फिर जब असिर का वक़्त आया तो वो भी छुडा दी.और फिर जब मग़िरब का वक़्त आया तो वो भी छुड़ा दी.और फिर जब इशा का वक़्त आया तो वो भी छुड़ा दी.उसके बाद वो जाने लगा तो ये शख्स बोला की भाई थोड़ा और ठहरो तो वो कहने लगा कि मुझे पहचाना मै एक शैतान हूँ।और मै अब जा रहा हूँ।तो उसने कहा कि ऐसे क्यों जा रहे हो ?ज़रा ठहर जाओ तो उस मरदूद ने कहा अब मै इधर एक पल भी नही ठहरूँगा.इस लिऐ कि जो हमारा बाप इबलीस है।उसने सबसे ज़्यादह इबादत की मगर एक सजदा ना करने से मरदूद क़रार दे दिया गया.इस लिऐ मै तुझे छोड़कर जा रहा हूँ।

प्यारे इस्लामी भाइयों व बहनों :अब मै एक नात शरीफ ज़िक्र कर रहा हूँ।ये एक ऐसी नात है।जिसे आप ग़ौर से सुनेंगे तो आपको वाक़ई इबरत हासिल होगी.इस शायर ने इसमे मुख्तसर अंदाज़ मे मैदाने महशर का नक़्शा खीचकर रख दिया है।.

★ *बे नमाज़ी के बारे मे हैरत अंगेज़ नात* ★

कैफियत हश्र मे सारी खुल जाऐगी
बे नमाज़ी की सूरत बदल जाऐगी

बे नमाज़ी हमारा कहा मान लो
है।ये हुक्मे खुदा इसको पहचान लो

क्या वहाँ भी कोई चाल चल जाऐगी
बे नमाज़ी की सूरत बदल जाऐगी
बे नमाज़ी से पूँछेगा जिसदम खुदा
तुझको कुछ खौफ दुनिया मे मेरा भी था
इतना सुनते ही सूरत बदल जाऐगी
कैफियत हश्र मे सारी खुल जाऐगी
सूद खा खाके दुनिया मे मोटा हुआ
हम ग़रीबों से वो सूद लेता रहा
हश्र मे सारी चरबी पिघल जाऐगी
कैफियत हश्र मे सारी खुल जाऐगी.

☆ बे नमाज़ी के बारे मे हैरत अंगेज़ हदीसे पाक ☆

फजिर. सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि जो शख्स फजिर की नमाज़ छोड़ता है।अल्लाह तआला उसके चहरे से नूर खत्म कर देता है।.

ज़ोहर. सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि जो शख्स ज़ोहर की नमाज़ छोड़ता है।अल्लाह तआला उसके रिज़्क से बरकत खत्म कर देता है।.

असिर. सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि जो शख्स असिर की नमाज़ छोड़ता है।अल्लाह तआला उसके जिस्म से ताक़त खत्म कर देता है।.

मग़िरब. सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि जो शख्स मग़िरब की नमाज़ छोड़ता है।अल्लाह तआला उसकी औलाद को ना फरमान कर देता है।.

इशा. सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि जो शख्स इशा की नमाज़ छोड़ता है।अल्लाह तआला उसकी नींद से राहत व सुकून खत्म कर देता है।.

प्यारे इस्लामी भाइयो व बहनों. ज़रा ग़ौर कीजिऐ कि जिसकी कोई भी चीज़ अल्लाह तआला खत्म करदे.

तो कोई इंसान ऐसा है।जो चहरे की रोनक़ दोबारा वापिस लादे.लिहाज़ा अभी वक़्त है।सुधर जाईऐ वरना जिस दिन मुंहों पर मोहर लग जाऐगी और हाँथ बाते करेंगे.उस वक़्त क्या होगा.

★ बे नमाज़ी की नमाज़े जनाज़ा पढ़ने से कोई फाइदा नही ★

एक बे नमाज़ी की नमाज़े जनाज़ा हो रही थी लोगों ने देखा कि उसपर फरिशते हंस रहे थे.तो किसी ने उनसे पूँछा तो उन्होंने जवाब दिया कि जो शख्स नमाज़ नही पढ़ता उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ने से कोई फाइदा नही है।.

★ बे नमाज़ी से नमाज़ पढ़ने की तौफीक़ छीन ली जाती है। ★

आज कल कुछ लोग नमाज़ नही पढ़ते हैं।और वो अपने दिल मे ये सोचते हैं। कि हम बहुत अच्छा कर रहे हैं।प्यारे ये अच्छी बात नही है।बल्कि तुमने ज़रा ये सोचा भी है।कि कहीं ऐसा तो नही है।कि उस रबने तुमसे नमाज़ पढ़ने की तौफीक़ छीन ली हो.अगर ऐसा हुआ तो तुम्हारी दुनिया और आखिरत दोनों बरबाद हो गई.

★ एक बुजुर्ग का इबरतनाक वाक़िया ★

एक बुजुर्ग की शाम की नमाज़ छूट गई तो उन्होंने खाना नही खाया और जब उनके घर वालों ने ज़िद की तो फरमाया कि जब मै उस रबकी इबादत नही कर सकता तो मै उसकी नेअ्मत भी नहीं खा सकता हूँ।और ऐसा करने मे मुझे हया (शरम)आती है।.

★ एक और बुजुर्ग का इबरतनाक वाक़िया ★

एक बुजुर्ग के पास अल्लाह तबारको तआ्ला ने इलहाम भेजा कि दो चीज़ों मे से एक चीज़ ले लो.तो कहा गया या जन्नत लेलो या दो रकाअ्त नमाज़ तो उन्होंने कहा कि मुझे ज़न्नत नही चाहिऐ इस लिऐ कि उसमे मेरी खुशी है।बल्कि मुझे दो रकाअ्त नमाज़ चाहिऐ इस लिऐ कि उसमे रबकी की खुशी है।और रब खुश हो गया जन्नत तो खुद बा खुद मिल जाऐगी.

★ एक बुजुर्ग के इबरतनाक दो फरमान ★

मशक़्क़त की वजह से नेकी मत छोड़ना इस लिऐ कि मशक़्क़त खत्म हो जाऐगी मगर नेकी बाक़ी रहेगी.और लज़्ज़त की वजह से गुनाह मत करना इस लिऐ कि लज़्ज़त खत्म हो जाऐगी मगर गुनाह बाक़ी रहेगा.अल्लाह तआ्ला हम सबको इन तमाम बातों पर अमल करने और नमाज़ पढ़ने और बे नमाज़ियों से बचने की तौफीक़ अता फरमाऐ।आमीन या रब्बल आलमीन.